IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शोधक स्वरूप आ विकास

डॉ मंजू कुमारी
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
कॉलेज ऑफ कॉमर्स आर्ट्स
एंड सांइस पटना – 20

मनुष्य विवेकशील प्राणी अछि। अपन विवेकशीलताक कारणेँ ओ अपन परिवेशक विषयमे सतत जिज्ञासा करैत अछि जे आगूक वस्तु की थीक? जाहि रूपमे हम एहि वस्तकेँ देखि रहल छी, ओ ओहि रूपमे वस्तुतः अछि वा नहि? एहि प्रकारेँ मानव जिज्ञासाक कारणे नव–नव वस्तु सभक खोज क' लैत अछि। खोज कयल वस्तु सभमे आन्तरिक आ बाह्य दुनू तरहक वस्तु होइत अछि। आन्तरिकसँ तात्पर्य अछि अपन अन्तरंगक विश्लेषण करब। एकरा अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक जिज्ञासा सभक समन होइत अछि, किछु अध्यात्मिको जिज्ञासा सभ समाहित होइत अछि आ एक प्रकारसँ जिज्ञासाक स्रोतेक अनुसंधान होमय लगैत अछि।

दोसर दिस बाह्य विषय सभक खोज होइत अछि। एकरा लेल समस्त संसारे विषयक रूपमे अवस्थित अछि। वनस्पतिक जीवन चक्रक खोज, रसायनक गुणधर्म वा सम्मिश्रणसँ उत्पन्न परिणामक खोज अथवा कोनो प्राचीन भवनक उत्खननसँ प्राचीन सभ्यताक अनावरण करब। ई सभ अनुसंधान बाह्य विषयक अछि। जिज्ञासे अनुसंधानक माय अछि आ ई जिज्ञासो मानवक विवेकशीलताक परिणाम अछि।एहि तरहेँ समस्त मानवीय विकासक मूल कारण मानवक विवेकशीलता अछि। मानव किछु विकास त' अपन सुखसुविधा आ भौतिक विलासक दृष्टिसँ कयलक अछि मुदा किछु एहनो विकास अछि जे विशुद्ध रूपसँ मानवक बौद्धिक विकासक दिस संकेत करैत अछि। भाषा साहित्य, कला आदिक क्षेत्रमे सुख आ सुविधाक वृद्धि पर ओतेक ध्यान नहि रहैत छैक, जतेक बौद्धिक विलास वा मानवसुलभ जिज्ञासा पर तेँ सभ अनुसंधानकेँ मानव या समाजक लेल भौतिक रूपसँ उपयोगी नहि कहल जा सकैत अछि। अर्थात् किछु अनुसंधान अवश्ये मानबक बुद्धि विलासक लेल होइत अछि। ककरो कथनक अर्थकेँ वा कथन शैलीकेँ केओ पसीन नहि करैत अछि। ओ मूलवक्ताक वाक्यकेँ सुधारैत अछि अथवा ओकर कथनक अर्थकेँ खण्डित करैत अछि। एहनो भ' सकैत अछि जे मूलवक्ताक वाक्यसँ त' ओ सहमति अछि मुदा आन केओ ओकरा ठीकसँ बुझि सकथि एहि उद्देश्यसँ ओ मूल्वाक्यकेँ अपना शब्दमे स्पष्ट करैत अछि। एकरा साहित्यिक अनुसंधान–यात्राक प्रारम्भ कहल जा सकैत अछि। एहि तरहेँ ई स्पष्ट होइत अछि जे शोध ज्ञानक समस्त रूपक अध्ययनक आधार अछि। सृष्टिक सम्पूर्ण ज्ञान शोधक वस्तु थीक, समस्त ज्ञानक विश्लेषण भए सकैत अछि। अज्ञातकेँ ज्ञात बनायब तथा ज्ञातकेँ पुनर्विवेचन द्वारा स्पष्ट आ व्यवस्थित रूप प्रदान करब शोधकार्य थीक। ज्ञानक तह धरि पहुँचब आ ज्ञानकेँ ज्ञात, अज्ञात तथ्य सभकेँ विश्लेषण करबाक लेल सिद्धान्त निर्धारित करब शोधक दायित्व अछि। साहित्य आ साहित्येतर सभ विषय पर शोध कएल जा सकैत अछि।

'शोध' क अर्थ एवं परिभाषा –

'शोध' शब्दक अर्थ स्पष्ट करैत डा. तिलक सिंह अपन पोथी नवीन शोध विज्ञान मे लिखैत छथि – 'शोध' शब्द 'शुध्' धातुसँ बनल अछि। 'शुध्' क मूल अर्थ अछि शुद्ध करब, परिमार्जित करब, संदेह रहित बनाएब, प्रामाणिक बनाएब। ई 'शोध' शब्दक विस्तृत अर्थ अछि। एहि अर्थमे संसारक कोनो वस्तु 'परिशुद्ध' रूपमे शोध होएत। मुदा अनुसंधानक क्षेत्रमे अज्ञात वा विस्मृत तथ्यकेँ सर्वग्राह्य बनाएब आओर ज्ञात तथ्यकेँ नवीन दृष्टिसँ संदेहरहित बनाएब शोध कहल जाएत।

डॉ. विनय मोहन शर्मा शोधक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत लिखैत छथि– ''खोज एक स्वतः प्रवहमान क्रिया है जिसका आदि तो है पर अन्त नहीं है।''[1]

शोधकेँ आओर स्पष्ट करैत डॉ. शर्मा आगाँ लिखैत छथि–''भली–भाँति व्याख्या सहित परिकल्पना या समस्या को हल करने की व्यवस्थित तथा तटस्थ प्रक्रिया का नाम ही शोध है।''[2]

डॉ. राम गोपाल शर्मा 'दिनेश' अपन 'साहित्य शोध और आलोचना' नामक आलेखमे शोधक चर्चा करैत लिखलनि अछि– ''कोई भी साहित्यिक सत्य जब परिष्कृत, प्रमाणित, संदेह रहित और तथ्यपूर्ण होकर सामने आता है, तब वह शोध का परिणाम बनता है।''[3]

शोधकेँ एकटा प्रक्रिया मानि डॉ. राम गोपाल शर्मा आगू लिखैत छथि–''जब तक वह दृष्टि खोजी हुई एवं अनुशीलित सामग्री पर न पड़े, तब तक उसके विषय में निर्मल और संदेहहीन निर्णय उपलब्ध नहीं हो पाता। शोध इस अन्तिम संदेहहीन और निर्मल सत्योपलिब्धि तक पहुँचने वाली प्रक्रिया का नाम है।''[4]

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी 'शोध' शब्दकेँ फड़िछाबैत अपन 'शोध–सामग्री' नामक आलेखमे कहैत छथि– ''शोध शब्द का प्रयोग 'रिसर्च' शब्द के अर्थ मे होने लगा है। 'रिसर्च' में 'रि' उपसर्ग मृशार्थक भी है और गम्भीर अभिनिवेशार्थक भी। स्थूल अर्थो में वह नवीन और विस्तृत तत्त्वों का अनुसंधान है जिसको अंग्रेजी में 'Discovery of the fact' कहते है। सूक्ष्म अर्थ में वह ज्ञात साहित्य के पुनर्मूल्यांकन और नयी व्याख्याओं का सूचक है। दोनों ही अर्थों में वह मनुष्य के बाह्य और अंतर विकास की कड़ियों का अनुसंधान है।''[5]

मैथिलीक वरीष्ट प्राध्यापक आ समालोचक डॉ. वासुकी नाथ झा 'मैथिलीक शोध–प्रबन्ध' नामक आलेखमे शोधकेँ परिभाषित करैत लिखलनि अछि– ''शोधक तात्पर्य अछि कोनो प्रकारक नवीन सत्य ;तथ्य क अन्वेषण करब–ऐतिहासिक सांस्कृतिक अथवा कोनो विद्या–ज्ञानादिक सम्बन्धमे। साहित्यक क्षेत्रमे कोनो ज्ञात वा सुप्रसिद्ध धारणा वा सिद्धान्तक नवीन अर्थानुसंधान अथवा मत–स्थापनक रूपमे सेहो शोध होइत अछि। अर्थात् ओ सभ रचना, जाहिमे सर्वविदित सत्य अथवा सर्वपरिचित साहित्यकेँ नव रूपमे देखल जाइत अछि, ओकर नव अर्थ लगाओल जाइत अछि शोधपूर्ण रचना थीक।''[6]

एहि तरहेँ ई स्पष्ट होइत अछि जे शोध सत्योपलब्धिक प्रक्रिया अछि जाहिसँ नव–नव मतक स्थापना होइत अछि।

आब प्रश्न उठैत अछि जे की ग्रन्थ–लेखन आ आलोचना–लेखन, शोध लेखनसँ भिन्न अछि? की तीनूक प्रक्रिया–प्रविधि समान अछि? की शोधकार्य सृजनकार्यसँ भिन्न अछि?

शोध–कार्य ग्रन्थ–लेखन, निबंध लेखन, आलोचना–लेखन आ सृजन कार्यसँ फराक अछि। ई सभ काज लेखकक व्यक्तित्त्वसँ प्रभावित रहैत अछि मुदा शोध कार्य तथ्यसँ प्रभावित होइत अछि। पहिल आत्मनिष्ठ अछि त' दोसर वस्तुनिष्ठ। पहिल मे लेखकक मान्यता प्रधान होइत अछि त' दोसर मे तथ्यक प्रधानता। पहिल व्यक्तिसँ शासित रहैत अछि, दोसर वस्तुसँ अनुशासित। दुनू तरहक काजक प्रक्रिया आ प्रविधि एक दोसरसँ भिन्न थिक। पहिल काजमे एकसरे लेखके लीन रहैत छथि, दोसरमे शोधार्थी, शोधनिर्देशक, शोधपरीक्षक आ शोध सामग्री आदि तत्त्व कार्यरत रहैत अछि।

शोध स्वरूपक अवधारणा

शोधक स्वरूप निम्नलिखित अवधारणासँ अनुशासित रहैत अछि –

1. शोधक क्षेत्र, 2. शोधक तत्त्व, 3. शोधक प्रकृति, 4. शोधक शैली एवं 5. शोधक आकार।

1. **शोधक क्षेत्र** – शोधक क्षेत्र ओतबहि विस्तृत अछि, जतेक ज्ञानक क्षेत्र। ज्ञानक विविध रूप शोधक क्षेत्रमे समाहित अछि। प्राकृतिक विज्ञान, मानव विज्ञान शोध क्षेत्रक विषय अछि। ज्ञान–विज्ञान सूक्ष्मसँ सूक्ष्म विषय पर शोध भए सकैत अछि।

   साहित्य एवं साहित्येत्तर विषय सभ शोधक विशिष्ट क्षेत्र अछि। शिष्ट साहित्य, लोक साहित्य, हस्तलिखित साहित्य आ मौलिक साहित्य शोधक मूल विषय अछि। भारतीय मनीषी सृष्टिक समस्त ज्ञानकेँ तीन रूपमे अभिव्यक्त कयलनि अछि –

   I. काव्यरूप – विश्वक समस्त साहित्य एहि रूपमे समाहित भ' जाइत अछि।

   II. शास्त्र–रूप – एहि मे विश्वक समस्त प्राकृतिक विज्ञान आ आन मानव विज्ञान आबि जाइत अछि।

   III. पुराण तथा इतिहास रूप – समस्त काव्यरूप आ शास्त्र रूपक विकासक अध्ययन एहि कोटिमे अबैत अछि।

   एहि तरहेँ ज्ञानक समस्त विषय शोध क्षेत्रक निर्माण करैत अछि आ शोध स्वरूपकेँ विस्तृत आयाम प्रस्तुत करैत अछि।

2. शोधक तत्त्व – ई शोधक सभसँ महत्त्वपूर्ण अवधारणा अछि। एहिसँ शोध सर्वाधिक प्रभावित रहैत अछि। शोधकेँ परिभाषित करैत डॉ. तिलक सिंह लिखैत छथि – ''शोध विज्ञान ज्ञान की वह धारा है जिसमें अज्ञात तथा अप्राप्त तथ्यों की खोज, ज्ञात तथा प्राप्त तथ्यों का नवीन आख्यान, अन्वेषक तथा निर्देशक सहभाव से अपेक्षित तथा स्तरीय प्रतिपादन शैली के द्वारा व्यवस्थित प्रक्रिया से इस प्रकार करते हैं कि ज्ञान क्षेत्र की सीमाओं का विस्तार होता है।''[7]

एहि परिभाषामे शोधक सभ तत्त्व विद्यमान अछि। एहिसँ शोधक निम्नलिखित तत्त्व स्पष्ट होइत अछि –

क. अज्ञातकेँ ज्ञात करब,
ख. ज्ञातकेँ पुनर्विवेचित करब,
ग. व्यवस्थित प्रक्रिया,
घ. वैज्ञानिक शैली,
ड़. ज्ञान क्षेत्रक सीमाक विस्तार,
च. आलोचनात्मक परीक्षण तथा प्रामाणिक निष्कर्ष।

'आगरा विश्वविद्यालय : शोध नियामावली' पोथीमे शोधक चारि गोट विशेषताक उल्लेख कयल गेल अछि –

i. तथ्यानुसंधान (Discovery of the facts)
ii. तथ्याख्यान (New enterpretation of the facts)
iii. ज्ञान क्षेत्रक सीमा विस्तार,
iv. संतोषप्रद उपस्थापन शैली।''[8]

3. शोधक प्रकृति – शोधक प्रकृतिक अर्थ अछि जे की शोध विज्ञान अछि अथवा कला? शोधकेँ तथ्यक परिशोधन मानल गेल अछि। वास्तवमे कलात्मक अभिव्यक्ति आ वैज्ञानिक विवेचन दुनू भिन्न–भिन्न अछि। आलोचनाक शैली कलात्मक आ शोधक शैली वैज्ञानिक होइत अछि। शोधमे प्रामाणिक तथ्येक महत्त्व अछि। तथ्य शासित शोधक प्रकृति निश्चित रूपसँ वैज्ञानिक अछि। तेँ शोध प्राकृतिक विज्ञानक कोटिमे आओत, कलाक कोटिमे नहि।

4. शोधक शैली – शोधक शैली वैज्ञानिक होइत अछि। शोध शैलीक नियमन तथा निर्धारण तथ्य करैत अछि। शोधार्थीकेँ अपना दिससँ किछु नहि कहबाक रहैत छैक। ओ तथ्यकेँ निर्पेक्षित भावसँ विश्लेषण आ वर्गीकरण करैत अछि। तथ्यक विश्लेषणसँ प्राप्त निष्कर्ष शोधक मूल्य होइत अछि। ओहिमे शोधार्थीक, अभिमत संलिप्त नहि रहैत छैक। कतौ–कतौ शोध शैली आलोचनात्मक शैलीसँ प्रभावित भ' जाइत अछि। ई शोधक लेल दोष अछि। एतय शोधक अवमूल्यन होइत अछि। आलोचनात्मक शैली व्यक्तिनिष्ठ होइत अछि आ शोधक शैली वस्तुनिष्ठ, दुनू फराक अछि।

5. शोधक आकार – शोधक आकारक नियमन विषय चुनावक प्रकृति पर आ प्रकार्यता पर निर्भर अछि। जँ शोधक विषय साहित्यक अछि तँ आकार किछु पैघ होयत। जँ विषय काव्यशास्त्र, पाठानुसंधान या भाषाविज्ञानक अछि तँ आकार छोट होयत। शोधक प्रक्रिया शोधक स्वरूपकेँ निर्धारित करैत अछि। एकर चारि गोट अंग अछि – i. अन्वेषण, ii. निर्देशक, iii. तथ्य आ, iv. परीक्षण।

6.शोधक स्वरूप

आधुनिक अर्थमे जे शोधक स्वरूप अछि से प्राचीन भारतीय साहित्य मे नहि छल। मुदा सत्यान्वेषणक लेल भारतीय मनीषी बड़ परिश्रम कयलनि अछि। यजुर्वेदक ईशावाशोपनिषद् मे स्पष्ट कहल गेल अछि –

''हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।।''[9]

अर्थात् सत्यक मुह आकर्षक वस्तुसँ झाँपल रहैत अछि जाहिसँ ओकरस्वरूप देखाइत नहि छैक। लोक आकर्षणक कारणेँ पथभ्रष्ट भ' जाइत अछि, सत्य धरि नहि पहुँचि पाबैत अछि। हे परमात्मा। सत्यक साक्षात्कारक लेल अपने एहि आवरणकेँ हटा लियौ।

उपनिष्दो कालमे सत्यान्वेषणक अनेक चेष्टा भेल छल। ज्ञान–विज्ञानक मूल स्रोतक गवेषणा अनेक जिज्ञासु मनीषी लोक कयने छलाह। शौनक ऋषि अंगिरा ऋषि सँ एकबेर पुछने छलाह –

''कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीति''[10]

अर्थात् ओ कोन तत्त्व अछि जकरा जानि लेलासँ समस्त दृश्यजगत् वा ज्ञान–विज्ञान ज्ञात भ' जाइत अछि।

अंगिरा ऋषि दू प्रकारक ज्ञानक प्रतिपादन करैत 'परा' विद्या आ 'अपरा' विद्याक निरूपण कयलनि। 'अपराक' अधीन वेद–वेदांगक गणना भेल आ 'परा' विद्याक रूपमे ओहि मूल उत्सक निरूपण भेल जाहिसँ शिष्यक जिज्ञासाक शमन भेल ''अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते।''[11] परा ओ विद्या अछि जाहिसँ सभ किछु ज्ञात भ' जाइत अछि।

एहिना ज्ञानक क्षेत्रमे आध्यात्मिक शोध चलैत रहल। ''औपनिष्दिक ऋषिगण ज्ञानक मूल तत्त्वकेँ खोजबाक प्रयास सर्वप्रथम सृष्टिक क्षेत्रमे कयलनि मुदा ओहि क्षेत्रमे असफल भेला पर मनोवैज्ञानिक जगत्मे अन्वेषणक प्रयत्न कयलनि।''[12] सत्य आ आत्माक विषयमे अनेक प्रश्न विविध उपनिषद् सभमे कयल गेल अछि। एकर समाधान भ' गेला उपरान्त फेर प्रश्न होइत छल जे ई ज्ञान (सत्यविषयक आ आत्म विषयक) केँ कोना प्राप्त कयल जाय ? ज्ञानक खोजमे अनेको आचार विषयक प्रश्न उत्पन्न भेल जे साधनाक समय मानव आचरणक आदर्श की होअए जकरा अनुशीलन सँ परमात्माक साक्षात्कार भ' सकय।

उपनिषद् सभमे तात्कालिक जिज्ञासाक क्षेत्रमे एक दिस सृष्टि विज्ञान छल त' दोसर दिस मनोवृत्तिक विश्लेषण। एक दिस परम सत्ताक कल्पना भ' रहल छल त' दोसर दिस नीतिशास्त्रक क्षेत्रमे जिज्ञासा पर जिज्ञासा चलि रहल छल।

उपनिषद् मे सत्यकेँ ब्रह्मक प्रतिरूप मानल गेलैक अछि। कहल गेलैक अछि जे असत्य बजनिहारक मूल सहित नाश भ' जाइत छैक –

''समूलो वा एष परिशुष्यति योऽमृतमभिवदति''[13]

मुण्डकोपनिषद् मे सबठाम सत्यक विजय देखाओल गेल अछि – '' सत्यमेव जयति नानृतं..... तत्सत्यस्य परमं निधानम्''।[14]

छान्दोग्योपनिषद् मे एक प्रकारसँ शोधक रहस्यकेँ सत्यक रूपमे प्रकाशित कयल गेल अछि–

''एष तु वा अतिवदति यः सत्येनातिवदति सोहं भगवः सत्ये नातिवदानीति सत्यं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति सत्यं भगवो विजिज्ञास इति।''[15]

एतय ई स्पष्ट कयल गेल अछि जे जे व्यक्ति विशेष ज्ञानी छथि ओएह सत्य बाजैत छथि – ''यदा वै विजानाति, अथ सत्यं वदति।''

अज्ञानी व्यक्ति सत्यक पालन नहि क' पाबैत छथि – 'नाविजानन् सत्यं वदति।' सत्य आ ज्ञानक मजगूत सम्बन्ध एहि पंक्ति सभमे देखाओल गेल अछि। तँ आन ठाम ब्रह्मकेँ सत्य, ज्ञान, आनन्द आदि पर्याय शब्दसँ अभिहित कयल गेल अछि। एहि प्रसंग श्रद्धाक सेहो नाम लेल गेलैक अछि।''[16]

एहि तरहेँ उपनिषद्क आधार पर भारतीय शोधकेँ हम निम्नांकित चरणमे विभाजित क' सकैत छी –

1. जिज्ञासा, 2. विज्ञान, 3. सत्य एवं 4. श्रद्धा। एहि बिन्दु पर औपनिषद्िक आ आनो शास्त्रीय दृष्टिसँ विचार करब अपेक्षित अछि।

जिज्ञासा शोधक प्रथम सोपान होइत अछि। सत्य वा वास्तविकताक प्रति उत्सुकता सबकेँ होइत छैक मुदा जिज्ञासा कोनो विवेकशीले लोकमे सम्भव छैक। पदार्थ आ ओकर गुण धर्मकेँ जानबा–बुझबाक इच्छेसँ शास्त्रक प्रति वा अन्वेषणक प्रति प्रवृत्ति उत्पन्न होइत छैक। तँ उपनिषद् सभमे जतय कतौ तत्त्वान्वेषणक प्रक्रिया देखाओल गेल अछि ओतय सम्वादक स्थितिमे प्रश्नकर्त्ता जिज्ञासे द्वारा प्रवृत्त होइत अछि।

जिज्ञासाक परिणति विज्ञान अर्थात् विश्लेषणात्मक ज्ञानमे होइत अछि। ई आवश्यक नहि जे जिज्ञासासँ व्यक्ति सोझे तत्त्व पर पहुँचि जाय किएक त' ओकरा समक्ष विविध विकल्प होइत छैक, जकरा हम सत्य वा असत्यक रूपमे देखि सकैत छियैक। जगत्क जिज्ञासा करैत अनेक विप्रतिपत्ति सभ उत्पन्न होइत छैक जे ई यथार्थ अछि वा कोनो वस्तुक विवर्त्त वा सपना जकाँ तुच्छ आदि। एतय सभ विकल्पक विश्लेषण विज्ञानक रूपमे होइत अछि। एकर व्युत्पत्ति अछि – ''विश्लिष्य ज्ञानं विज्ञानम्।''

विज्ञानसँ सत्यक प्राप्ति होइत छैक। अनेक विकल्पकेँ पार क' क' जखन एक विकल्पमे जिज्ञासु तत्त्वक निर्धारण करैत अछि, तखन ओ विकल्प ''सत्य'' कहबैत अछि। एकर सम्बन्ध 'अस्ति' अर्थात् वर्तमान वा स्थायित्वसँ छैक। सत्यक व्युपत्ति होइत अछि – 'अस् + शतृ = सत्, आ सत् + यत् = सत्य। सति वर्तमाने यत् प्रवर्त्तते तत् सत्यम्।' सत्यक मादे जे ऋषि यथार्थताक दर्शन देलनि हुनका लेल यथार्थ जगते सत्य थिक। दोसर दिस जे ऋषि एकरा स्वप्नवत् तुच्छ बुझलनि हुनका लेल इएह सत्य थिक। यद्यपि अन्तिम सत्य (परमार्थ सत्य) त' एक वा अखण्ड अछि मुदा विभिन्न विवेचनसँ प्राप्त धारणा सभक आधार पर तथाकथित सत्याभास त' अनेक भ' सकैत अछि। आधुनिको शोधकार्यमे सत्यक ई वैविध्य देखल जा सकैत

अछि। जेना – कालिदासक काल–निर्धारण । ककरो लेल गुप्तकालक मत उचित अछि त' ककरो लेल प्रथम शताब्दी ई. पू. क मत सत्य अछि। तैयो तर्कक बलें ओकर अन्तिम सत्य पर पहुँचबाक अवकाश त' रहिते छैक।

उपर्युक्त वर्णित तथ्यक आधार पर कहल जा सकैत अछि जे मनुष्यकेँ जानबाक इच्छा वेद, उपनिषद् कालहि सँ छल। तेँ ऋषि–मुनि वेदाचार्य उपनिषद्कार लोकनि सत्य असत्य, ज्ञान–विज्ञान श्रद्धा–भक्ति, सृष्टिक रहस्य आदिक संदर्भमे चिन्तन मनन कयलनि जकरा हमरा लोकानि शोधक प्रक्रिया कहि सकैत छी आ ई प्रक्रिया निरतंर आँगा बढ़ैत रहल आ एहिना साहित्यक विकास आ शोधक क्षेत्रमे विकास होइत आबि रहल अछि।

संदर्भ –

1. शोध प्रविधि, डॉ. विनय मोहन शर्मा, पृ. 4
2. शोध प्रविधि, डॉ. विनय मोहन शर्मा, पृ. 6
3. साहित्य शोध के सिद्धान्त और समस्याएँ सं. डॉ. देवराज उपाध्याय, पृ. 33
4. साहित्य शोध के सिद्धान्त और समस्याएँ सं. डॉ. देवराज उपाध्याय, पृ. 33
5. साहित्य शोध के सिद्धान्त और समस्याएँ सं. डॉ. देवराज उपाध्याय, पृ. 46
6. मैथिली साहित्यक रूपरेखा, प्रथम संस्करण, पृ. 266 सं. डॉ. वासुकीनाथ झा
7. नवीन शोध विज्ञान, डॉ. तिलक सिंह, पृ. 20
8. आगरा विश्वविद्यालय : शोध नियमावली, पृ. 04
9. यजुर्वेद – 40.17
10. मुण्डकोपनिषद् – 1.1.3
11. मुण्डकोपनिषद् – 1.1.5
12. उपनिषद् दर्शन का रचनात्मक सर्वेक्षण – पृ. 49
13. प्रश्नोपनिषद् – 3.1.
14. मुण्डकोपनिषद् – 3.1.6
15. छान्दोग्योपनिषद् – 7.16.1
16. छान्दोग्योपनिषद् – 5.19.1